International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 4; July 2017; Page No. 01-02

दलित चेतना की दृष्टि से शबरी का मूल्यांकन

डॉ0 हरिश्चन्द्र अग्रहरि

असिस्टेंट प्रोफेसर (अतिथि), हिंदी विभाग, राजकीय महाविधालय, जैतवार, सतना, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

एक समय था जब सारा मानव समाज प्रकृति की गोद में स्वच्छन्द रुप से विचरण करता था। सर्वत्र प्रकृति जैसी ही पवित्रता थी या फिर यह कहिए कि उसे किसी का बोध ही नहीं था कि क्या जाति है क्या धर्म है ? समय बदला, परिस्थितियाँ बदलीं लोगों की धारणाओं और चिन्तन शक्ति में परिवर्तन हुआ। परिणाम स्वरुप समाज वर्गों में विभाजित हो गया और यह जाति/धर्म विभाजन हमारी परम्परा बन गई। तर्क दिये जाने लगे कि परम्पराओं का निर्वहन होना चाहिए। यद्यपि इन विभाजनों के कारण हम कई बार लुटे, बिखरे टूटे, किन्तु आज तक आँखे नहीं खुली। अनेक महात्माओं ने इस जातीय समीकरण को तोड़ने का प्रयास किया, कवितायें लिखीं, तर्क दिये। कबीर ने तो यहाँ तक कह दिया कि

"जो तू बाँभन बाँभिनी जाया,
तो आन–बाट व्है क्यों नहीं आया।।" [1]

लेकिन उससे क्या फर्क पड़ा ? आपने कहा हमने सुन लिया। जातिवाद की जड़े काँफी गहरी है और वर्तमान समय में यह राजनीति का प्रमुख हथियार बन चुका है और इस तेज धार वाले हथियार से हमारी मनुष्यता समाप्त हो रही है।

जहाँ तक शबरी का प्रश्न है तो शबरी या शाबर जाति हम सबके लिए नई नहीं है जिसने भी रामायण व रामचरित मानस पढ़ा या सुना है वे सभी शबरी को भी कुछ न कुछ जानते होगें। हाँ ! यह बात अलग है कि बाल्मीकि और तुलसी ने शबरी का उतना विशद् चित्राँकन नहीं किया जितना की नरेश मेहता ने किया है और फिर बाल्मीकि व तुलसी करते भी क्या ? उनके हृदय मे तो राम नाम का दीप ही प्रज्वलित हो रहा था उन्हें किसी दूसरे पात्र/पात्रों के विषय में लिखने का अवकाश नहीं था। उर्मिला को गुप्त जी ने उठाया तो शबरी को नरेश मेहता ने ये दोनों ही सशक्त पात्रा हैं। त्याग और भक्ति की ये दोनों प्रतिमूर्ति थीं। गोस्वामी जी ने शबरी की भक्ति भावना के विषय में लिखा है कि –

"पानि जोरि आगे भई ठाड़ी,
प्रभु विलोकि प्रीति अति बाढ़ी।
केहि विधि अस्तुति करौ तुम्हारी
अधम जाति मैं जड़मति भारी।।" [2]

शबरी के माध्यम से नरेश जी ने तत्कालीन वर्ण व्यवस्था को उजागर किया है। त्रेता युग का चित्रांकन करते हुए कवि ने आरम्भ में ही लिखा है कि –

"थे ब्राह्मण सिरमौर, तपस्या
के कारण सब जन में
रक्षक औ पालक क्षत्रिय
थे वैश्य बने व्यापारी,
श्रमिक शूद्र थे, थी समाज
की यही व्यवस्था सारी।।" [3]

समाज में वर्ण–भेद ठीक है, किन्तु ईश्वर दरबार में इसका कोई स्थान नहीं है इसी जातीय समीकरण को तोड़ने के लिए नरेश जी ही मतंग आश्रम गये है। इतनी गहराई, इतना समर्पण कोई पढ़ के नहीं लिख सकता है और यह भी नहीं है कि नरेश जी शूद्र रहे हैं जिसके कारण उन्होने अपने पक्ष की बात कही हों। उन्होने एक शूद्रा के मनोभावों को उजागर किया है आज भी बहुत से ऐसे व्यक्ति हैं, जो शूद्र है, अज्ञानी है उनमें भक्ति भावना प्रबल है। कवि का विशिष्ट दृष्टिकोण सामाजिक विषमता एवं वर्ण व्यवस्था से ऊपर उठकर स्वस्थ समाज की रचना करना है। आज आवश्यकता है मतंग ऋषि जैसे संवेदनशील मानवीय व्यवहार वाले व्यक्ति की, जो सामजिक निंदा, उपेक्षा की चिन्ता किये बगैर शबरी की कर्मठता भक्ति भावना के प्रशंसक हों। आज आवश्यकता है एकलव्य, कर्ण, उर्मिला, शबरी जैसी प्रतिभओं को निखारने की।

कवि ने शबरी के माध्यम से जातिगत रुढ़ियों के विरुद्ध कर्म और आचरण पर आधारित भेदहीन समाज की रचना का संदेश दिया है और स्पष्ट रुप से यह स्थापित किया है कि मानवीय संवेदना ही सामाजिक समादर की अधिकारिणी होती है। ये सभी समस्यायें वर्तमान समाज की कठिन चुनौतियाँ हैं। नरेश जी इन चुनौतियों का उत्तर अपनी रचनाओं के माध्यम से देते हैं। हर व्यक्ति के हृदय में मानवीय संवेदनायें बनी रहें। दुःखी, हीन, अज्ञानी लोग तो हर युग में मिलेंगे किन्तु वे त्यागने के लिए नहीं, गले लगाने के लिए है। किसी कवि ने ऐसे व्यक्ति के विषय में कहा था कि –

"समाज इन्हें नीच कहता है
पर है भी तो यह प्राणी।
इनमें भी मन और भाव है
पर नहीं वैसी वाणी।।" [4]

नरेश जी एक आदर्श कवि थे, उनकी दृष्टि में भी वर्ण–भेद का कोई मतलब नहीं था और न होना चाहिए, शबरी के माध्यम से उन्होने जिस दलित चेतना को साकार किया है, वह आदरणीय है–

"शबरी की दिनचर्या अब
पूजा प्रबंध था करना।
अब थी अभिभावक पूरी
सब पर निगरानी रखना।
अब कभी–कभी प्रवचन में
उल्लेखित होती शबरी
मनों वह परम् सती हो
हो भक्त शिरोमणि शबरी" [5]

शबरी के माध्यम से कवि ने जिस आध्यात्म पराणयता और पवित्रता को चित्रित किया है। निश्चित रुप से वह उनके व्यापक हृदय और मानवीय संवेदना को प्रस्तुत करता है। ऐसी संवेदनायें मेरे देश समाज परिवार में बनी रहें इसलिए शबरी पर दृष्टि गई। कवि ने रचना के आरम्भ मे ही लिखा है कि –" मानवीय दृष्टि उत्पन्न हो

इसके लिए पुत्र ईशान और पुत्री वान्या को यह रचना समर्पित है।" [6] और जहॉ तक इस रचना की भाषा शैली का प्रश्न है तो इस सन्दर्भ में केवल इतना की कहा जा सकता है कि आप पढ़ते जाइये और उसका भावार्थ उसके साथ–साथ की चलता जायेगा, ऐसी ही है नरेश की शबरी।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. कबीर ग्रन्थावली – सम्पादित – श्यामसुन्दर दास– पृ0सं0 79
2. शबरी – नरेश मेहता – लोक भारती इलाहाबाद – पृ0सं0 79, सं0 2008
3. शबरी – नरेश मेहता – लोक भारती इलाहाबाद – पृ0सं0 83, सं0 2008
4. रामचरित मानस – गोस्वामी तुलसीदास – 108वाँ सं0 अरण्यकाण्ड – पृ0सं0 650
5. शबरी – नरेश मेहता – लोक भारती इलाहाबाद – पृ0सं0 04, सं0 2008
6. शबरी – नरेश मेहता – लोक भारती इलाहाबाद – पृ0सं0 39, सं0 2008
7. शबरी – नरेश मेहता – रचना की भूमिका में
8. साक्षात्कार – पत्रिका – साहित्य अकादमी भोपाल, सं0 2008
9. सृजन–यात्रा – डॉ0 प्रमोद त्रिवेदी